

## विपश्यना की दृष्टि से 'चतस्सो पटिसम्भिदा' : एक संक्षिप्त विश्लेषण

प्रेम दत्त सिंह मेघंकर<sup>1</sup>, सुभाष कुमार सिंह<sup>2</sup>

<sup>1</sup> शोधार्थी, बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

<sup>2</sup> प्रचार्य, हिन्दी विभाग, सत्यावती महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

### सारांश

पटिसम्भिदा का अर्थ होता है 'विभाजन या विश्लेषण द्वारा प्राप्त ज्ञान'। यह वह बौद्धिक क्षमता है जिससे व्यक्ति, विचारों, और सत्य को सूक्ष्मतरंग स्तर पर समझने में सक्षम होता है। इसका मुख्य उद्देश्य जीवन की वास्तविकता को समझना और संसार के कार्य-कारण संबंधों का गहन विश्लेषण करना है। पटिसम्भिदा एक साधक को अपने मानसिक और बौद्धिक ज्ञान को गहराई से समझने का मार्गदर्शन करता है। यह ज्ञान जीवन और सत्य की गहन व्याख्या में सहायक होता है। विपश्यना साधना के दौरान उत्पन्न होने वाले अनुभवों को समझने और उनके अर्थ की सही व्याख्या करने के लिए ये पटिसम्भिदा अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। पटिसम्भिदा बौद्ध दर्शन और साधना की एक गहन व्याख्या है, जो साधक को सत्य की गहरी समझ और उसकी व्याख्या करने की क्षमता प्रदान करता है। विपश्यना साधना के संदर्भ में, यह साधक को प्रत्येक अनुभव का सही अर्थ और मर्म समझने में सहायता करता है, जिससे वह मानसिक शुद्धि और आत्मज्ञान की ओर अग्रसर हो सके। इसे चार प्रमुख प्रकारों में विभाजित किया गया है जो निम्नलिखित हैं—

1. अर्थ पटिसम्भिदा (अर्थ ज्ञान)
2. धम्म पटिसम्भिदा (धम्म का ज्ञान)
3. निरुत्ति पटिसम्भिदा (शब्द और भाषा का ज्ञान)
4. पटिभान पटिसम्भिदा (तत्काल बुद्धिमत्ता का ज्ञान)

**मूल शब्द:** विपश्यना, 'चतस्सो पटिसम्भिदा', बौद्ध दर्शन

अर्थ पटिसम्भिदा व्यक्ति के ज्ञान को केवल शाब्दिक स्तर तक सीमित नहीं रखता, बल्कि उसे उस ज्ञान को गहराई से अनुभव करने, आत्मसात करने और व्यवहार में लाने की प्रेरणा देता है। अर्थे जाणं अर्थपटिसम्भिदा<sup>1</sup> का अर्थ है, वस्तुओं के वास्तविक अर्थ या सार को समझने का ज्ञान। विपश्यना में जब साधक अपने मन और शरीर के अनुभवों का अवलोकन करता है, तो अर्थ पटिसम्भिदा उसे यह समझने में मदद करती है कि हर अनुभव अनित्य, दुःख और अनात्म है। साधक इस ज्ञान के माध्यम से संवेदनाओं, विचारों, और धारणाओं के वास्तविक अर्थ तक पहुंचता है, जिससे अज्ञान (अविज्जा) का नाश होता है।

धम्मपटिसम्भिदा के अंतर्गत व्यक्ति न केवल धम्म के बाहरी सिद्धांतों को समझता है, बल्कि वह धम्म की गहराई, उसकी प्रकृति और विभिन्न तत्वों के आपसी संबंधों को भी समझता है। यह ज्ञान उन नियमों और धारणाओं पर आधारित होता है जो जीवन के अनुभवों, नैतिकता, ध्यान और ज्ञान के अभ्यास से जुड़ी होती हैं। धम्म पटिसम्भिदा वह विशेष ज्ञान है जो किसी को धम्म के सिद्धांतों का सूक्ष्मता से विश्लेषण करने और उन्हें अनुभव और तर्क के आधार पर समझने में सक्षम बनाता है। यह व्यक्ति को धम्म के विभिन्न पहलुओं की गहन और समग्र समझ प्रदान करता है। धम्म जाणं धम्मपटिसम्भिदा<sup>2</sup> का अर्थ है, धम्म के गूढ़ तत्वों और सिद्धांतों को समझने का ज्ञान। विपश्यना साधना में, साधक धम्म (सत्य) के नियमों—जैसे पटिच्चसमुत्पाद और चार आर्य सत्य—को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करता है।

निरुत्ति पटिसम्भिदा साधक को अपने अनुभवों को सटीक रूप में वर्णन करने की क्षमता प्रदान करता है, जिससे वह न केवल अपने अनुभव को सही रूप से समझ पाता है बल्कि दूसरों के साथ उसका सही संप्रेषण भी कर सकता है। यह ध्यान के माध्यम से प्राप्त आंतरिक ज्ञान को शब्दों में व्यक्त करने का कौशल है धम्मनिरुत्ताभिलापे जाणं निरुत्तिपटिसम्भिदा<sup>3</sup> का अर्थ है, धम्म के निरुत्ति (शब्दों और भाषाओं) की सटीक समझ। विपश्यना

के अनुभवों को सही शब्दों में अभिव्यक्त करना एक चुनौती होती है। निरुत्ति पटिसम्भिदा के माध्यम से व्यक्ति को धम्म के शब्दों, वाक्यांशों और अभिव्यक्तियों का सही ज्ञान प्राप्त होता है, जिससे वह न केवल धम्म की भाषा को समझता है, बल्कि उसे प्रभावी ढंग से दूसरों तक पहुंचाने में भी सक्षम होता है।

पटिभान पटिसम्भिदा को इस रूप में समझा जा सकता है कि यह व्यक्ति को किसी भी जटिल परिस्थिति में सही शब्दों, सही दृष्टिकोण और सही उत्तर के माध्यम से मार्गदर्शन करने में सक्षम बनाती है। इसका संबंध केवल बुद्धिमत्ता से नहीं है, बल्कि यह उन गहरी अंतर्दृष्टियों से आता है, जो धम्म की समझ और अनुभव से उत्पन्न होती हैं। जाणेषु जाणं पटिभानपटिसम्भिदा<sup>4</sup> का अर्थ है, त्वरित और बुद्धिमान प्रतिक्रिया देने का ज्ञान। विपश्यना में, जब साधक गहन ध्यान अवस्था में होता है, तो उसे विभिन्न अनुभवों, भावनाओं, और विचारों का सामना करना पड़ता है। पटिभान पटिसम्भिदा साधक को उन अनुभवों का त्वरित और सही उत्तर देने की क्षमता प्रदान करता है। यह ज्ञान त्वरित उत्तर देने और मानसिक स्थिरता बनाए रखने में सहायक होता है, जिससे ध्यान में सटीकता और स्पष्टता आती है।

चार आर्य सत्य बौद्ध धर्म का केंद्रीय सिद्धांत हैं, जो व्यक्ति को जीवन के वास्तविक स्वरूप को समझने और उसके द्वारा उत्पन्न दुःख से मुक्त होने का मार्ग प्रदान करते हैं। दुःख सच्च, समुदय सच्च, निरोध सच्च, और मग्ग सच्च इन चारों को सच्चवारो<sup>5</sup> कहा जाता है जिसका अर्थ है चार आर्य सत्यों की दृष्टि से पटिसम्भिदा का वर्गीकरण या विश्लेषण। यहाँ सच्च (सत्य) से तात्पर्य चार आर्य सत्यों से है, जिनके आधार पर इस विभाजन को समझाया गया है। इन चार सत्यों का अनुभव और उनकी गहराई से समझ प्राप्त करना विपश्यना का मुख्य उद्देश्य है।

चतस्सो पटिसम्भिदा के अंतर्गत चार आर्य सत्यों का विस्तार देखा जाता है। 'दुःखे जाणं अर्थपटिसम्भिदा<sup>6</sup>' का अर्थ है, प्रथम आर्य सत्य दुःख के अर्थ को समझने का ज्ञान। अर्थ पटिसम्भिदा

के अंतर्गत साधक इस सत्य को प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से समझता है कि संसार में सब कुछ दुःखपूर्ण है। यह दुःख किसी बाहरी कारण से नहीं बल्कि स्वयं जीवन के स्वभाव से उत्पन्न होता है। साधक यह ज्ञान प्राप्त करता है कि जीवन के हर अनुभव में अनित्यता और पीड़ा निहित है।

दुःख समुदय के ज्ञान को धम्मपटिसम्भिदा बताते हुए कहा गया है कि 'दुःखसमुदये जाणं धम्मपटिसम्भिदा'<sup>7</sup> जिसका अर्थ है, दूसरे आर्य सत्य दुःख के कारण को समझने का ज्ञान। धम्म पटिसम्भिदा के तहत साधक यह जानता है कि दुःख का कारण तृष्णा (लालसा या इच्छा) है, जो संसार में जन्म, वृद्धावस्था, और मृत्यु के चक्र को चलाती है। यह ज्ञान साधक को कारण-परिणाम के नियम (पटिच्चसमुप्पाद) के आधार पर यह समझने में मदद करता है कि संसारिक दुःख किस प्रकार उत्पन्न होता है।

दुःखनिरोध को अत्थपटिसम्भिदा बताते हुए कहा गया है कि 'दुःखनिरोधे जाणं अत्थपटिसम्भिदा'<sup>8</sup> जिसका अर्थ है, तीसरे आर्य सत्य दुःख के निरोध को समझने का ज्ञान। यह ज्ञान साधक को यह समझने में मदद करता है कि दुःख का अंत संभव है। जब तृष्णा का नाश होता है, तो दुःख का भी नाश हो जाता है। यह निब्बान (निर्वाण) की अवस्था है, जहाँ जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति प्राप्त होती है। साधक को यह ज्ञान प्राप्त होता है कि मुक्ति का यह मार्ग आंतरिक शांति और आत्मज्ञान की ओर ले जाता है। दुःखनिरोध गामिनी मार्ग को धम्म पटिसम्भिदा बताते हुए कहा गया है कि 'दुःखनिरोधगामिनिया पटिपदाय जाणं धम्मपटिसम्भिदा'<sup>9</sup> जिसका अर्थ है, चौथे आर्य सत्य दुःख निरोध के लिए मार्ग को समझने का ज्ञान। साधक को यह ज्ञान प्राप्त होता है कि अष्टांगिक मार्ग (सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाणी, सम्यक कर्म, सम्यक आजीविका, सम्यक प्रयास, सम्यक स्मृति, सम्यक समाधि) के अभ्यास से दुःख का अंत संभव है। यह मार्ग साधक को मानसिक शुद्धता, सम्यक ज्ञान, और आत्मज्ञान की ओर अग्रसर करता है।

इन चारों आर्य सत्यों का अर्थ या विवेचन निरुत्ति पटिसम्भिदा कहा जाता है जिसके बारे में विभङ्गपालि में आया है कि धम्मनिरुत्ताभिलापे जाणं निरुत्तिपटिसम्भिदा'<sup>10</sup> अर्थात् चार आर्य सत्यों के सटीक वर्णन और भाषा में समझने का ज्ञान। साधक को यह ज्ञान प्राप्त होता है कि चार आर्य सत्यों के गूढ़ और गहन तत्त्वों को शब्दों और भाषा के माध्यम से कैसे व्यक्त किया जाए। यह न केवल साधक के लिए बल्कि अन्य साधकों के साथ संवाद और शिक्षा के आदान-प्रदान में भी सहायक होता है।

निर्णय लेने की क्षमता को पटिभान कहते हैं इसका एक अर्थ तर्कशक्ति भी होता है। पटिभान पटिसम्भिदा में कहा गया है कि 'जाणेसु जाणं पटिभानपटिसम्भिदा'<sup>11</sup> जिसका अर्थ है, चार आर्य सत्यों के संदर्भ में तुरंत और बुद्धिमान उत्तर देने की क्षमता। यह ज्ञान साधक को त्वरित रूप से बौद्धिक और तर्कशील उत्तर देने की क्षमता प्रदान करता है, जिससे वह चार आर्य सत्यों के संबंध में उत्पन्न किसी भी प्रश्न या जिज्ञासा का सही उत्तर दे सके। इस प्रकार चार आर्य सत्यों के संदर्भ में पटिसम्भिदा इस बात का वर्णन करता है कि चारों पटिसम्भिदाएँ— अर्थ ज्ञान, धम्म ज्ञान, निरुत्ति ज्ञान, और पटिभान ज्ञान, चार आर्य सत्यों को समझने और उनके अनुरूप साधना करने में किस प्रकार सहायक होती हैं।

बौद्ध दर्शन में कारण और प्रभाव का सिद्धान्त अति महत्वपूर्ण है, विभङ्गपालि में इसे हेतुवारो<sup>12</sup> कहा गया है जिसका अर्थ है कारण और परिणाम के संदर्भ में पटिसम्भिदा का वर्गीकरण। बौद्ध दर्शन में, कारण-परिणाम का सिद्धान्त यह दर्शाता है कि सभी घटनाएँ और अनुभव एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं। कोई भी घटना अकेली नहीं होती; वह कई कारकों के संयोजन का परिणाम होती है। और इसके आधार पर ज्ञान की विभिन्न श्रेणियों

को समझने की प्रक्रिया हेतुवारो कहलाती है। इस वर्गीकरण में चार प्रमुख पटिसम्भिदाओं (ज्ञान के प्रकार) को हेतु-फल के दृष्टिकोण से व्याख्यायित किया गया है।

हेतुमिह जाणं धम्मपटिसम्भिदा'<sup>13</sup> एक महत्वपूर्ण बौद्ध अवधारणा है, जो विशेष रूप से ज्ञान (जाण) और धम्म की गहन समझ (पटिसम्भिदा) के संदर्भ में उपयोग की जाती है। जिसका अर्थ है, कारण को समझने का ज्ञान। बौद्ध दर्शन में, हेतु का अर्थ है किसी घटना, अवस्था या स्थिति के उत्पन्न होने का कारण। धम्म पटिसम्भिदा के अंतर्गत साधक को यह ज्ञान प्राप्त करता है कि सभी घटनाओं के पीछे एक कारण होता है, और कुछ भी बिना कारण के उत्पन्न नहीं होता। यह कारण-परिणाम का सिद्धान्त पटिच्चसमुप्पाद पर आधारित है, जो यह बताता है कि एक तत्व या घटना दूसरे तत्व या घटना पर निर्भर होती है। उदाहरण के लिए, तृष्णा (इच्छा) दुःख का कारण है, और इसके निवारण से दुःख का अंत होता है।

धर्म के अर्थ की गहरी समझ को अत्थ पटिसम्भिदा कहते हैं, कारण और परिणाम के अर्थ में विभङ्गपालि में कहा गया है कि हेतुफले जाणं अत्थपटिसम्भिदा'<sup>14</sup> अर्थात् परिणाम को समझने का ज्ञान। अत्थ पटिसम्भिदा के तहत साधक यह ज्ञान प्राप्त करता है कि हर कारण का एक परिणाम होता है। जब किसी घटना का कारण समझ में आ जाता है, तो उसके परिणाम को भी समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए, जब हम यह समझते हैं कि तृष्णा दुःख का कारण है, तब इसका परिणाम अर्थात् दुःख भी स्वाभाविक रूप से स्पष्ट हो जाता है। इसी प्रकार, तृष्णा के नाश से सुख और शांति का परिणाम मिलता है।

धम्म के शब्दों और उनकी अभिव्यक्ति के ज्ञान को निरुत्तिपटिसम्भिदा कहते हैं। विपश्यना की साधना में धम्मनिरुत्ताभिलापे जाणं का अर्थ है धम्म के सिद्धांतों और शब्दों का गहरा बोध। विपश्यना साधक जब ध्यान में धम्म की गहरी समझ प्राप्त करता है, तो उसे यह ज्ञान हो जाता है कि धम्म के सिद्धांत और शब्द अपने आप में सीमित नहीं हैं; बल्कि उनका उद्देश्य आंतरिक अनुभव और सत्य का प्रत्यक्ष बोध कराना है। विपश्यना में व्यक्ति जो अनुभव करता है, उसे शब्दों और सिद्धांतों में व्यक्त करने का ज्ञान धम्मनिरुत्ताभिलापे जाणं कहलाता है। यह ज्ञान केवल शाब्दिक या सतही नहीं है, बल्कि ध्यान और अनुभव के आधार पर उत्पन्न होता है। विभङ्गपालि में कहा गया है कि धम्मनिरुत्ताभिलापे जाणं निरुत्तिपटिसम्भिदा'<sup>15</sup> अर्थात् धम्म के कारण और परिणाम को सटीक रूप से भाषा और शब्दों के माध्यम से व्यक्त करने का ज्ञान। निरुत्ति पटिसम्भिदा यह ज्ञान प्रदान करता है कि किस प्रकार कारण और परिणाम की गहरी अवधारणाओं को शब्दों और भाषा में स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जाए। बौद्ध शिक्षाओं में, धम्म के गूढ़ सिद्धांतों और शिक्षाओं को सही ढंग से समझने और प्रस्तुत करने की क्षमता महत्वपूर्ण होती है। यह पटिसम्भिदा साधक को इस कौशल में निपुण बनाती है। बौद्ध दर्शन में पटिभानपटिसम्भिदा की अवधारणा महत्वपूर्ण है, पटिभान का अर्थ 'विवेचना' या 'गहन विचार' होता है जबकि पटिसम्भिदा का अर्थ 'विशेष ज्ञान' या 'विभाजित ज्ञान' होता है। विभङ्गपालि में कहा गया कि जाणेसु जाणं पटिभानपटिसम्भिदा'<sup>16</sup> अर्थात् ज्ञान के संदर्भ में बुद्धिमान और त्वरित उत्तर देने का ज्ञान। पटिभान पटिसम्भिदा के अंतर्गत साधक को तुरंत और सटीक बुद्धिमत्ता के साथ उत्तर देने की क्षमता प्राप्त होती है। जब कारण और परिणाम से जुड़े प्रश्न या स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, तब यह ज्ञान साधक को उन पर सही तरीके से प्रतिक्रिया करने और तर्कसंगत उत्तर देने में सहायक होता है। विपश्यना में साधक न केवल अपने अनुभवों को समझता है, बल्कि उन्हें विवेचनात्मक दृष्टिकोण से देखता है। यह दृष्टिकोण उसे अपनी प्रतिक्रियाओं, भावनाओं और विचारों के प्रभाव को समझने में मदद करता है। विपश्यना में पटिभानपटिसम्भिदा का कार्य एक साधक

को अपने ज्ञान को गहराई से समझने और उसे जीवन में लागू करने में सहायक होता है। साधक अपने अनुभवों का विवेचन करता है, जिससे उसे अपनी प्रवृत्तियों, विचारों और भावनाओं का सही ज्ञान प्राप्त होता है। इस प्रकार हेतुवारो<sup>17</sup> के माध्यम से विपश्यी साधक पटिसम्भिदा का सार प्रस्तुत करता है। हेतुवारो के माध्यम से साधक को यह ज्ञान प्राप्त होता है कि किसी भी घटना या अनुभव के पीछे एक कारण होता है, और उस कारण का परिणाम स्वाभाविक रूप से जुड़ा होता है। इस ज्ञान के आधार पर वह जीवन के अनुभवों और धम्म के सिद्धांतों को गहराई से समझ पाता है।

धम्म को धारण करना धम्मवारो<sup>18</sup> कहा जाता है, विभङ्गपालि में धम्मवारो के संदर्भ में पटिसम्भिदा का वर्गीकरण किया गया है। धम्मवारो विपश्यना साधना में धम्म के वास्तविक और अनुभवजन्य अभ्यास का क्रम है। यह उस समय और अवस्था को इंगित करता है, जब साधक ध्यान के माध्यम से धम्म का अनुभव करता है, उसे समझता है और उसे अपने जीवन में आत्मसात करता है। धम्मवारो के माध्यम से उन विभिन्न प्रकार के धम्मों (सत्य तत्वों) का ज्ञान दिया गया है, जिनके माध्यम से साधक अपने अनुभवों को समझ सकता है और अपने साधना पथ को स्पष्ट रूप से पहचान सकता है। इस उद्घरण में विभिन्न प्रकार के धम्मों को चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है, जिनके आधार पर साधक को इन धम्मों के ज्ञान के विभिन्न रूपों को समझने का अवसर मिलता है। विभङ्गपालि में कहा गया है कि ये धम्मा जाता भूता सञ्जाता निब्बत्ता अभिनिब्बत्ता पातुभूता, इमेसु धम्मेसु जाणं अत्थपटिसम्भिदा<sup>19</sup> अर्थात् इन सभी धम्मों के अर्थ को समझने का ज्ञान। यहाँ पर जाता भूता, सञ्जाता, निब्बत्ता, अभिनिब्बत्ता और पातुभूता शब्दों से विभिन्न प्रकार के धम्मों की पहचान की जा रही है।

- **जाता भूता:** जो उत्पन्न हुआ है।
- **सञ्जाता:** जो साथ-साथ उत्पन्न होता है।
- **निब्बत्ता:** जो समाप्त हो चुका है, नष्ट हो गया है।
- **अभिनिब्बत्ता:** जो पुनः उत्पन्न हुआ है।
- **पातुभूता:** जो प्रत्यक्ष रूप से प्रकट हुआ है।

साधक इन सभी धम्मों को समझने के लिए अत्थ पटिसम्भिदा का प्रयोग करता है। यह उसे यह जानने में मदद करता है कि प्रत्येक घटना या अनुभव का क्या अर्थ है, क्या वह उत्पन्न हुआ है, क्या वह खत्म हो गया है, और उसका क्या प्रभाव है। धम्मपटिसम्भिदा को समझाते हुए कहा गया कि यम्हा धम्मा ते धम्मा जाता भूता सञ्जाता निब्बत्ता अभिनिब्बत्ता पातुभूता, तेसु धम्मेसु जाणं धम्मपटिसम्भिदा अर्थात् इन धम्मों के धम्म (सत्य या धार्मिक सिद्धांत) को समझने का ज्ञान। इस स्थान पर साधक को यह ज्ञान प्राप्त होता है कि इन घटनाओं या अनुभवों के भीतर छिपे धम्म (सत्य तत्व) को समझे। बौद्ध दृष्टिकोण में, हर घटना, चाहे वह उत्पन्न हो, समाप्त हो, या पुनः उत्पन्न हो, उसके भीतर एक धम्म (सत्य) निहित होता है। यह ज्ञान साधक को बोध देता है कि सत्य का गूढ़ तत्व हर घटना में है, चाहे वह क्षणिक हो या स्थायी। विपश्यना के संदर्भ में, इस वाक्य का प्रमुख उद्देश्य यह है कि साधक उन धम्मों को पहचानता और समझता है जो विभिन्न जीवन स्थितियों में प्रकट होते हैं। विपश्यना साधना में, साधक अपने अनुभवों का विश्लेषण करता है और उन धम्मों की गहरी समझ विकसित करता है। साधक ध्यान के माध्यम से अपनी मानसिक स्थिति, भावनाओं और संवेदनाओं का अवलोकन करता है। यह अवलोकन उसे उन धम्मों के ज्ञान की ओर ले जाता है, जिनका अनुभव वह कर रहा है। यह ज्ञान केवल शब्दों या सिद्धांतों तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह साधक को उनके सार को आत्मसात करने में मदद करता है, जिससे वह अपने अनुभवों और धम्म के बीच संबंध स्थापित कर सके।

तत्र धम्मनिरुत्ताभिलापे जाणं निरुत्तिपटिसम्भिदा – का अर्थ है, धम्मों के शब्द और भाषा के माध्यम से स्पष्ट रूप से व्यक्त करने का ज्ञान। यह साधक को उस सत्य को सही शब्दों और भाषा में व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करता है। जब धम्म की गहराई को समझा जाता है, तब उसे प्रभावी रूप से और स्पष्ट रूप से व्यक्त करना आवश्यक होता है। यह निरुत्ति पटिसम्भिदा साधक को इस कार्य में सक्षम बनाती है।

जाणेसु जाणं पटिभानपटिसम्भिदा – का अर्थ है, ज्ञान के संदर्भ में बुद्धिमान और त्वरित उत्तर देने का ज्ञान। साधक को जब इन धम्मों की सही पहचान होती है और जब उसे धम्म के सत्य तत्वों की पूरी समझ होती है, तब वह तत्काल और सटीक बुद्धिमत्तापूर्ण प्रतिक्रिया देने में सक्षम होता है। यह क्षणिक निर्णय और स्पष्टता की स्थिति है, जो साधक को किसी भी स्थिति में सही और सटीक प्रतिक्रिया देने में मदद करती है।

अयं धम्मवारो— यह पूरे उद्घरण का सार प्रस्तुत करता है कि यह चार प्रमुख प्रकार के धम्मों की पहचान और उनके सही समझ के लिए चारों पटिसम्भिदाओं को कैसे उपयोग किया जाता है। धम्मवारो साधक को यह सिखाता है कि हर अनुभव या घटना के भीतर एक सत्य छिपा होता है, और इसे जानने के लिए चारों प्रकार के ज्ञान (अर्थ, धम्म, निरुत्ति, पटिभान) की आवश्यकता होती है।

### संदर्भ सूची

1. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 718, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
2. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 718, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
3. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 718, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
4. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 718, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
5. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 719, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
6. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 719, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
7. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 719, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
8. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 719, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
9. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 719, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
10. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 719, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
11. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 719, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
12. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 720, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
13. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 720, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
14. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 720, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
15. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 720, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
16. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 720, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
17. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 720, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।

18. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 720, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
19. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 721, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
20. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 721, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
21. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 721, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।
22. विभङ्गपालि, पटिसम्भिदाविभङ्गो, सुत्तन्तभाजनीयं, अनु. सं. 721, विपश्यना विशोधन विन्यास, इगतपूरी।